Prof. Khushbu Kumari
Guest Teacher
Dept. of Political Science
V.S.J. College, Rajnagar, Madhubani, Inmu

Class - B.A-I (H)
Paper - II

Page No.
Date

Topic - गांधीजी की देन

राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, औद्योगिक, विश्व के विचार, जीवन और संस्कृति के क्षेत्र में गांधीजी की देन अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है। जिस समय महात्मा गांधी ने सार्वजनिक क्षेत्र में पदार्पण किया, उस समय सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक वातावरण अत्यन्त भ्रष्ट था। गांधीजी की अन्तरात्मा सर्वत्र फैली हुई हिंसा और भ्रष्टता से क्षुब्ध हो उठी और उन्होंने नैतिक मूल्यों को सार्वजनिक जीवन का आधार बनाने का संकल्प किया। उन्होंने अपने व्यवहार और कार्य से यह सिद्ध कर दिया कि सत्य और अहिंसा व्यक्तिगत व्यवहार के ही नहीं, वरन् सार्वजनिक और विशेषतया राजनीतिक व्यवहार के भी आधार बन सकते हैं तथा आत्मबल से पशुबल की चुनौती का सफलतापूर्वक सामना किया जा सकता है।

गांधीजी की समस्त राजनीति धर्म पर आधारित है। उन्होंने राजनीति को वर्तमान युग की कूटनीति से ऊँचा उठाकर नैतिकता के उच्च स्तर पर पहुँचाया और कहा कि सार्वजनिक तथा नैतिक जीवन में भी श्रेष्ठ लक्ष्य की प्राप्ति के लिए नैतिक साधनों का ही प्रयोग किया जाना चाहिए। उन्होंने धर्म में एक ठोस मानवतावादी रूप का प्रतिपादन किया, जिसका लक्ष्य मानवता की

Scanned with CamScanner

सेवा करना होता है। उन्होंने धर्म को व्यापकता प्रदान करके इसे लौकिक और सांसारिक बनाया।

गांधीजी ने व्यक्ति के महत्व तथा मानव शक्तियों में हमारे विश्वास को पुनः जाग्रत किया। पश्चिम की औद्योगिक सभ्यता ने मानव जाति को बहुत अधिक आघात पहुंचाया है और वर्तमान समय में मानव सामाजिक और राजनीतिक यन्त्र का एक पुर्जा बनकर रह गया है। उन्होंने मानव महत्ता का प्रतिपादन किया और इस बात पर जोर दिया कि वास्तविक लोकतंत्र तब तक नहीं हो सकता जब तक कि सर्वसाधारण दुरुपयोग होने पर राज्य की सत्ता का विरोध करना न सीख जाय।

आचार्य कृपलानी ने गांधीजी के बारे में कहा कि, "राजनीति का सत्य, अहिंसा और साधनों की पवित्रता द्वारा आध्यात्मीकरण करके, अन्याय एवं निरंकुशता का सत्याग्रह द्वारा सामना करके तथा अपने रचनात्मक कार्यक्रमों द्वारा गांधीजी ने सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक जीवन का संयोग एवं समन्वय करने का प्रयत्न किया, तथा प्रभावकारी लोकतंत्र की स्थापना कर उन्होंने न्याय और समानता पर आधारित समाज की नींव डालकर विश्व शान्ति के लिए मार्ग प्रशस्त किया।"

Khushbu Kumari
26th Aug. 2020

Scanned with CamScanner